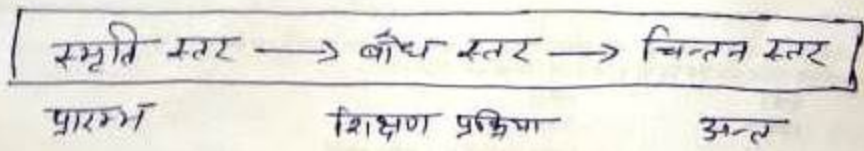
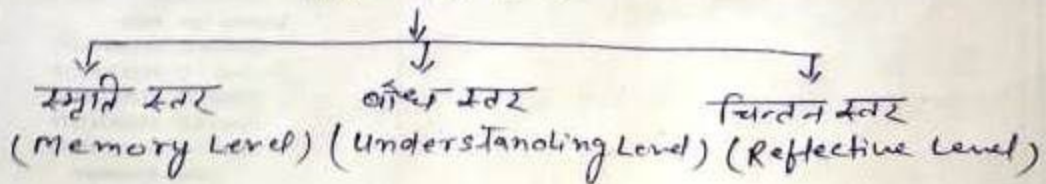


Reflective-teaching. चिन्तन-शिक्षण

Reflective level of teaching (चिन्तन-स्तर पर शिक्षण)

शिक्षण कक्षा में विभिन्न कार्यों को सम्पन्न करने की एक व्यवस्था है। जिसका उद्देश्य छात्रों को सीखने के लिये प्रेरित करना है। शिक्षण के उद्देश्य अल्पतम स्तर होने चाहिये ताकी शिक्षक प्रभावशाली स्थापनों का प्रयोग कर इसे अधिक शक्तिमान बना सकता है। शिक्षण प्रक्रिया के अन्तर्गत 'पाठ्यकाल' एक महत्वपूर्ण उपकरण है, जिसके बिना शिक्षण नहीं हो सकता। "एक ही पाठ्यकाल को शिक्षण उपकरण परिस्थितियों बिचारहीन से लेकर बिचारपूर्ण स्थिति तक ले जा सकता है।" अतः शिक्षण की प्रक्रिया की परिस्थितियों को हम एक सतत क्रम पर ~~विचारपूर्वक~~ विचारों की व्यवस्थाओं या स्तरों में विभाजित कर सकते हैं। इससे शब्दों में हम कह सकते हैं कि शिक्षण की पूर्ण प्रक्रिया को निम्न-लिखित तीन स्तरों में विभाजित किया जा सकता है।

शिक्षण के स्तर



Reflective-teaching - (चिन्तन-शिक्षण)

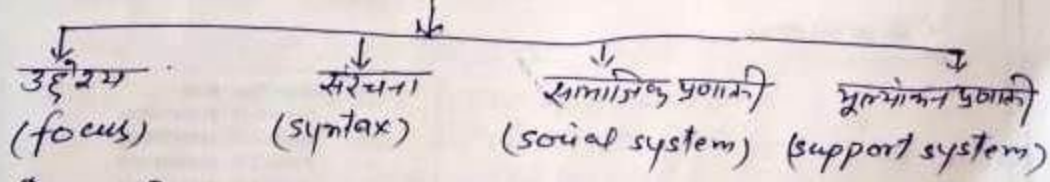
चिन्तन मानव के विकास का महत्वपूर्ण पद है। इस स्तर पर शिक्षक अपने छात्रों में चिन्तन, तर्क तथा कल्पना शक्ति का बढावा है ताकि बाद में ये छात्र इन उपकरणों के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान कर सकें। इस स्तर पर शिक्षण में स्मृति तथा बोध्य दोनों स्तरों का शिक्षण निहित होता है। इसके अभाव में चिन्तन स्तर का शिक्षण सम्भव नहीं हो सकता।

चिन्तन-स्तर पर शिक्षण समझना- देखित होना है। शिक्षण क्षेत्रों के सामने बड़े सम्बन्धित उच्चतर माध्यम प्रस्तुत करता है जिस पर छात्र सक्रिय व अभिप्रेरित होकर स्वयं चिन्तन प्रारम्भ कर देते हैं। यह चिन्तन आलोचनात्मक दृष्टि कोण वाला मौलिक चिन्तन होता है। इस प्रकार के शिक्षण में छात्रों के कोशक व्यवहार को बड़े विचारित करने के अवसर देने हुए शिक्षण का कार्य है उनमें सृजनात्मक क्षमताओं का विकास करना। यह शिक्षण का सर्वोच्च स्तर है और पूर्णतया विचारवान है। इस प्रकार के शिक्षण में छात्र अपनी अभिव्यक्ति, धारणा, विचार, मान्यता तथा ज्ञान के अनुसार समझना-समाधान के लिये विचार तथा तर्क करते हुए नवीन ज्ञान की खोज करते हैं। यह एक उत्पादक क्रिया है जिसमें निर्माण, खोज, शोध व सृजन को मजबूत दिया जाता है।

इस स्तर पर छात्र स्वयं रुचि लेकर, स्वच्छंद से चिन्तन, मनन, तर्क व कल्पना करते हुए समस्या का समाधान खोजते हैं। और स्वयं को अधिक आत्म विश्वास वाला, जिम्मेदार तथा सक्रिय छात्र बनाते हैं। इस स्तर पर शिक्षणार्थ, शिक्षकों को योग्य, अनुभवी, विद्युत तथा विद्या विशेषज्ञ तथा प्रभावशाली होना चाहिये।

इस स्तर पर शिक्षण हेतु डूब महोदय का शिक्षण प्रतिमान काफी प्रचलित है, जो इस प्रकार है -

शिक्षण प्रतिमान-पक्ष



(i) उद्देश्य (focus) -

- (1) छात्रों में मौलिक व स्वतंत्र चिन्तन शक्ति का विकास करना।
- (ii) छात्रों में समस्या-समाधान हेतु आलोचनात्मक तथा सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का विकास करना।

11) संरचना (Syntax) -

यह समस्या की प्रकृति पर आधारित रहती है। यह व्याक्तिगत तथा सामाजिक दोनों तरह की हो सकती है। इसके चार स्तूपान (step) होते हैं -

- (1) छात्रों के सामने समस्या - परिस्थिति उत्पन्न करना।
- (2) छात्रों का उपकल्पना का निर्माण करना।
- (3) उपकल्पना युक्ति के लिये स्तर, चिन्तन, मनन का प्रयोग करना।
- (4) उपकल्पना का परीक्षण तथा समस्या - समाधान करना।

(111) सामाजिक प्रणाली (social system) -

- (1) कक्षा का वातावरण पूर्ण रूप से खुला व स्वतन्त्र होता है।
- (2) छात्र विभागीय और स्वप्रेरित होते हैं।
- (3) छात्रों के सामाजिकरण का हृदय आधार है।
- (4) सहयोग, सामाजिक संवेदनशीलता तथा सहानुभूति का वातावरण रहता है।

(12) मूलभूत प्रणाली (support system) -

- (1) ~~निबन्धनात्मक~~ निबन्धनात्मक मूलभूत अधिक उपयोगी है।
- (2) अभिवृत्ति, समस्या - समाधान, स्तूपनात्मक आदि के परीक्षण उपदेश है।

चिन्तन - शिक्षण के सुझाव -

- 1) चिन्तन - शिक्षण के पूर्व स्मृति तथा बोध - स्तर का ज्ञान अनुरूप होना चाहिए।
- 2) प्रश्नक सम्बन्धित स्तूपान (step) का अनुसरण विद्यमान चाहिए।
- 3) छात्रों का उपाका - स्तर उच्च होना चाहिए।
- 4) उनमें सहानुभूति, प्रेम तथा संवेदनशीलता होनी चाहिए।
- 5) समस्या की अनुभूति होनी चाहिए।
- 6) गानात्मक विकास की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- 7) छात्रों के अधिक से अधिक मौखिक तथा स्तूपनात्मक चिन्तन के लिये उत्तरदा प्रदान किये जाने चाहिए।
- 8) शिक्षण का वातावरण प्रजातान्त्रिक बनाने का प्रयास करना चाहिए।
- 9) छात्रों के अधिक से अधिक सही चिन्तन के लिये प्रेरित विद्यमान चाहिए।